याद है वो गेरूई शाम.................

याद है वो गेरूई शाम जब, खेल कर लौटते वक्त रेला ही क़ायनात होता था ।

याद है वो लंबी रात जब अधसोई रातों में माँ का आँचल ही तारीफ की बात होता था ।

वो नीली सुबह वो जगमग दोपहर जब जन्नत और कुछ नहीं कक्षा में यारों को साथ होता था ।

आब-ओ-दाना रोशन करने को बिजली के बल्ब की जरूरत ना होती थी तब, औलाद के चश्मों का नूर ही जहाँ का आफताब होता था ।

मखमली नरम बिछौने और एयर कंडीशनर की हमें कभी जरूरत ना थी, चबूतरे की नीम के नीचे पलंग ही आरामगाह होता था ।

सिनेमा और डिस्को में रंगी इन शामों से तौबा हुआ करती थी, मज़ार की कव्वाली और माँ की लोरी ही हमारा उल्हान होता था ।

पेप्सी, कोला और मिनरल वॉटर के इंतज़ार में प्यासे कभी ना रहें, आँगन के कुवें का पानी ही आब-ओ-हयात होता था ।

ये लंबी गाड़ियों से नापने वाली दूरी तो हमारे बीच कभी ना रही, यारों की संगत कश्ती और ख्याल बादबान होता था ।

साथ की कमी नहीं होती थी पहले हिन्दुस्तान में, जब हर किसी को अपने पड़ोसी का नाम याद होता था ।

भिन्न भिन्न भाषा धर्म और प्रांत होकर भी यह देश एक था क्योंकि तब जोड़ने वाला इंटरनेट नहीं एक जज्बात होता था ।

कुछ भी कर गुजरने के इस जज्बे के पीछे किसी मशीन की ताकत ना थी, माँ, बाप भाई, बहन, साथी या ईश्वर का सिर पर हाथ होता था।

हिन्दुस्तान का वो पुराना मौसम अभी बीता नहीं बस कुछ धीमा हुआ है, लाएँगे वही समा दोबारा क्योंकि थके की जरूरत सहारा नहीं, साथ होता था ।

Salaam Bharat

We are coming to salute India.

www.salaambharat.org info@salaambharat.org

Salaam Bharat [A Vision Of XO Group]